Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on - **" गुर्जर-प्रतिहार (Gurjar Pratihar)।" Note -1** *(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)*

गुर्जर-प्रतिहार (Gurjar Pratihar)

गुर्जर प्रतिहार राजवंश का नाम उत्तर भारत की महत्त्वपूर्ण शक्ति के रूप मे आता है।गुर्जर-प्रतिहारों ने कन्नौज की प्रतिष्ठा कायम की और कन्नौज को लेकर जो उनका त्रिदलीय संघर्ष पालों और राष्ट्रकूटों के साथ हुआ, इसमें बड़ी ऐतिहासिक भूमिका उन्होंने निभायी । जब गुर्जर प्रतिहारों का पतन हुआ तो इन्हीं के अवशेष पर अनेक राजपूत राज्यों का उदय हुआ। हर्ष की मृत्यु के बाद उत्तरी भारत की जो राजनीतिक एकता छिन्न भिन्न हो गयी थी ।उसे पुनर्स्थापित करने के लिए इस राजवंश ने सफल प्रयत्न किया । इसके प्रतापी नरेशों ने उत्तरभारत के अधिकांश भाग को दीर्घ काल तक अपने अधीन बनाये रखा । यही नहीं, एक लम्बे समय तक उन्होंने सिंध प्रदेश से आगे बढ़ती हुई मुस्लिम शक्ति को रोके रखा और उत्तरी भारत में उसका विस्तार नहीं होने दिया । गुर्जर प्रतिहार राजा,प्रतापी ,विजेता और कुशल शासक तो थे ही, साहित्य, कला और संस्कृति के प्रेमी तथा अन्य स्वरूपों के प्रति भी समर्पित थे

उत्पत्ति एवं मूल स्थान - इतिहासकार केनेडी ने प्रतिहारों को ईरानी मूल का बताया है जबकि कनिंघम महोदय ने प्रतिहारों को शकों और यूचियों की संतान बताते हैं।स्मिथ, व्यूलर और हर्नले उन्हें हूणों से जोड़ते हैं । चीनी यात्री ह्वेनसांग उन्हें भारतीय क्षत्रिय बताते हैं । बी. एन. पुरी का भी दृष्टिकोण है कि वह भारतीय क्षत्रिय थे । आर. एस. त्रिपाठी, सी. वी. वैद्य, दशरथ शर्मा आदि ने भी भारतीय क्षत्रिय दृष्टिकोण को अपनाया है ।

जोधपुर और घटियल शिलालेखों से गुर्जर प्रतिहार का मूल निवास गुर्जरात्र (राजपुताना का एक भाग) में स्पष्ट होता है । किंतु एच. सी. रे के अनुसार उनकी सत्ता का प्रारंभिक केन्द्र मौंडवैपुरा (राजस्थान) था। अधिकांश विद्वानों ने गुर्जर प्रतिहारों की सत्ता का प्रारंभिक केन्द्र अवन्ती अथवा उज्जैन माना है । जैन-ग्रंथ हरिवंश प्रतिहार नरेश वत्सराज को अन्तिभूभृत (अवन्ती का राजा) कहता है । राष्ट्रकूट नरेश अमोधवर्ष के संजन ताम्रपत्र अभिलेख में लिखा है कि उसके एक पूर्वज दन्तिदुर्ग ने एक महादान यज्ञ किया था । इस अवसर पर उसने गुर्जरराज को उज्जैन में प्रतिहार (द्वारपाल) बनाया था । इस लेख के

उल्लेख से भी यह पता चलता है कि गुर्जर प्रतिहार उज्जैन अथवा अवंती के शासक थे। उनकी कर्मभूमि तो निश्चित रूप से उत्तरी भारत ही रही।

नागभट्ट-प्रथम (730 ई० - 756 ई०)

नागभट्ट प्रथम गुर्जर प्रतिहारों का प्रथम प्रमुख राजा था । पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख और बाणकृत हर्षचरित में उसका उल्लेख आता है । उसने गुर्जरों की विभिन्न शाखाओं का संगठन किया । उसने मालवा को जीता । मिहिरभोज की ग्वालियर प्रशस्ति के अनुसार उसने अरबों को परास्त किया और मालवा से गुजरात तक अपनी सीमा विस्तृत की । राष्ट्रकूटों से भी उसका संघर्ष हुआ । दन्तिदुर्ग से वह पराजित हुआ, लेकिन दन्तिदुर्ग की उत्तरी भारत विजय स्थायी नहीं रही । नागभट्ट ने अपने उत्तराधिकारी को एक बड़ा राज्य सौंपा जिसमें गुजरात, मालवा और राजपुताना के कुछ हिस्से सम्मिलित थे ।

वत्सराज (783-795ई.)

वत्सराज इस वंश का दूसरा प्रतापी राजा था, हालांकि उसके पूर्व और नागभट्ट प्रथम के बाद दो राजा

हुए। शक्तिशाली राजा वत्सराज ही हुआ, जिसका शासन-काल 783 ई० से 795 ई० तक था । उसने राजस्थान के मध्यभाग और उत्तर भारत के पूर्वी भाग पर अधिकार किया । वत्सराज के ही समय में कन्नौज पर स्वामित्व के लिए त्रिदलीय संघर्ष हुआ । वत्सराज ने पाल शासक धर्मपाल को पराजित कर उसका राजमुकुट छीन लिया, किंतु बंगाल से वापस आते समय राष्ट्रकूट राजा ध्रुव ने उसे पराजित कर दिया । वह मारवाड़ की ओर भागने को मजबूर हो गया । कुछ समय के लिए गुर्जरों की शक्ति पर अंकुश लग गया ।

References: Internet & Competitive books.